मोठ, मूंग दालों के अफ्रीकी देशों में उत्पादन की संभावनाएं तलाशने एसकेआरएयू पहुंचा अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल

किर्क हाउस ट्रस्ट तथा एसकेआरएयू के बीच एम ओ यू के तहत प्रतिनिधिमंडल कर रहा है विजिट

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। बदलती जलवायुवीय दशाओं के बीच अफ्रीकी देशों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से थार रेगिस्तान जैसे शुष्क क्षेत्रों में होने वाली मूंग, मोठ व अन्य दलहनी फसलों की जानकारी लेने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय पहुंचा। यूनाइटेड किंगडम के किर्क हाउस ट्रस्ट तथा एसकेआरएयू के बीच हुए एमओयू के तहत यह प्रतिनिधिमंडल दो दिवसीय दौरे पर राजस्थान आया है। अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने बताया कि प्रतिनिधि मंडल को विश्वविद्यालय द्वारा मोठ, मूंग सहित अन्य दलहनी फसलों तथा अन्य कृषि अनुसंधान की जानकारी दी गई। दलहनी फसलों के जर्मप्लाज्म से अफ्रीका में खाद्य सुरक्षा की नई संभावनाएं तलाशने की दिशा में किए गए कार्यों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर किर्क हाउस ट्रस्ट के एसटीओएल कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पीएन माथुर ने कहा कि अफ्रीका के शुष्क क्षेत्रों में सीमित दलहनी फसलों की खेती होती है, जिनमें चवला प्रमुख है। जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में मोठ मूंग बीन जर्मप्लाज्म को साझा करने से खाद्य सुरक्षा तथा अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल को विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र और विभिन्न शोध गतिविधियों की जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात करते हुए व्यवसायी आशीष अग्रवाल ने कहा कि बीकानेरी भुजिया ने बीकानेर को वैश्विक पहचान दिलाई है। इससे क्षेत्र में रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि मरामा बीन पर हो रहा अनुसंधान क्षेत्र के किसानों तथा उद्यमियों के लिए लाभकारी साबित होगा । उद्यमी दीपक अग्रवाल ने कहा कि दाल आधारित प्रसंस्करण उद्योग बेहतर पोषण सुरक्षा देने में प्रभावी है। स्थानीय पलायन रोकने तथा रोजगार देने में बीकानेर में यह क्षेत्र प्रभावी सिद्ध हुआ है।

किर्कहाउस ट्रस्ट की सीईओ डॉ. क्लोडिया कैनल होलजैइस ने इस भ्रमण के लिए विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त किया। डॉ. भूपेंद्र सिंह शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान बलजीत सिंह बिश्नोई सहित विश्वविद्यालय प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, डीन पीजी डॉ राजेश वर्मा व अन्य के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

दो दिवसीय दौरे पर हैं डेलिगेशन

प्रतिनिधिमंडल में यूनाइटेड किंगडम , साउथ अफ्रीका , यूनाइटेड नेशंस ऑफ अमेरिका, नामीबिया, स्विटजरलैंड, मेडागास्कर सहित अन्य देशों से कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिक तथा विद्यार्थी शामिल हैं। यह प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को विश्वविद्यालय के रोजड़ी स्थित फार्म पर मारामा बीन के परीक्षणों तथा बीज उत्पादन के साथ-साथ मोठ और मूंग बीन बीज उत्पादन कार्यक्रम की जानकारी लेगा, साथ ही स्थानीय किसानों व वैज्ञानिकों के साथ संवाद भी आयोजित किया जाएगा।

मारामा बीन अनुसंधान का लिया जायजा

अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल को कृषि अनुसंधान केंद्र बीकानेर में संचालित किए जा रहे मरामा बीन अनुसंधान की प्रगति से भी अवगत करवाया गया इस दौरान अफ्रीका से प्राप्त किए गए जर्मप्लाज्म तथा बीज उत्पादन कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में एसटीओएल (स्टाइल) प्रोग्राम के तहत दलहनी फसलों के अनुसंधान, जर्मप्लाज्म आदान-प्रदान और किसानों के लिए संभावित लाभों पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है की किर्क हाउस ट्रस्ट द्वारा विश्वविद्यालय को मारामा बीन पर अनुसंधान के लिए 3 साल का प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है।

किर्क हाउस न्यास और एसकेआरएयू के एमओयू के तहत दौरा

अफ्रीका में मोठ-मूंग की संभावनाएं तलाशने बीकानेर पहुंचा अंतरराष्ट्रीय दल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. बदलती जलवायु के बीच अफ्रीकी देशों के शुष्क क्षेत्रों में मूंग, मोठ और दूसरी दलहनी फसलों की खेती की संभावनाएं तलाशने अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय पहुंचा। यूनाइटेड किंगडम के किर्क हाउस न्यास और एसकेआरएयू के बीच हुए एमओयू के तहत दो दिवसीय दौरे पर राजस्थान आया यह दल बीकानेर में शुष्क क्षेत्र की फसलों, उनके जर्मप्लाज्म और बीज उत्पादन कार्यक्रम की जानकारी ले रहा है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एनके शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल को मोठ, मूंग सहित विभिन्न दलहनी फसलों पर किए जा रहे कृषि अनुसंधान और उपलब्ध जर्मप्लाज्म की जानकारी दी। अफ्रीकी देशों में खाद्य सुरक्षा की संभावनाओं को मजबूत करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों से भी दल को अवगत कराया गया।

अफ्रीका में चवला प्रमुख, नई फसलों की तलाश

किर्क हाउस न्यास के एसटीओएल कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पीएन माथुर ने बताया कि अफ्रीका के शुष्क क्षेत्रों में फिलहाल सीमित दलहनी फसलों की खेती होती है, जिनमें चवला प्रमुख है।

जलवायु परिवर्तन के कारण वहां किसानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी हो रही हैं। ऐसे में कम पानी और शुष्क परिस्थितियों में बेहतर उत्पादन देने वाली फसलों की संभावनाएं तलाशना जरूरी है।

बीकानेरी भुजिया से दाल प्रसंस्करण तक चर्चा

दौरे के दौरान बीकानेरी भुजिया के जरिए क्षेत्र में रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को मिले बढ़ावे का उदाहरण भी साझा किया गया। व्यवसायी आशीष अग्रवाल ने खाद्य प्रसंस्करण से जुड़े अनुभव बताए। उद्यमी दीपक अग्रवाल ने कहा कि दाल आधारित प्रसंस्करण उद्योग पोषण सुरक्षा को मजबूत करने में प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

आज रोजड़ी फार्म में देखेंगे परीक्षण

प्रतिनिधिमंडल में यूनाइटेड किंगडम, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, नामीबिया, स्विट्जरलैंड और मेडागास्कर सहित विभिन्न देशों में कृषि अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिक और विद्यार्थी शामिल हैं। दल मंगलवार को विश्वविद्यालय के रोजड़ी स्थित फार्म का दौरा करेगा। यहां मारामा बीन के परीक्षण और बीज उत्पादन के साथ मोठ व मूंग के बीज उत्पादन कार्यक्रम की जानकारी ली जाएगी।

मोठ, मूंग दालों के अफ्रीकी देशों में उत्पादन की संभावनाएं

तलाशने एसकेआरएयू पहुंचा अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल

बीकानेर, (निसं)। बदलती जलवायुवीय दशाओं के बीच अफ्रीकी देशों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से थार रेगिस्तान जैसे शुष्क क्षेत्रों में होने वाली मूंग, मोठ व अन्य दलहनी फसलों की जानकारी लेने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय पहुंचा। यूनाइटेड किंगडम के किर्क ह्यउस ट्रस्ट तथा एसकेआरएयू के बीच हुए एमओयू के तहत यह प्रतिनिधिमंडल दो दिवसीय दौरे पर राजस्थान आया है। अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने बताया कि प्रतिनिधि मंडल को विश्वविद्यालय द्वारा मोठ, मूंग सहित अन्य दलहनी फसलों तथा अन्य कृषि अनुसंधान की जानकारी दी गई। दलहनी फसलों के जर्मप्लाज्म से अफ्रीका में खाद्य सुरक्षा की नई संभावनाएं तलाशने की दिशा में किए गए कार्यों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर किर्क हाउस ट्रस्ट के एसटीओएल

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पीएन माथुर ने कहा कि अफ्रीका के शुष्क क्षेत्रों में सीमित दलहनी फसलों की खेती होती है, जिनमें चवला प्रमुख है। जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में मोठ मूंग बीन जर्मप्लाज्म को साझा करने से खाद्य सुरक्षा तथा अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल को विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र और विभिन्न शोध गतिविधियों की जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात करते हुए व्यवसायी आशीष अग्रवाल ने कहा कि बीकानेरी भुजिया ने बीकानेर को वैश्विक पहचान दिलाई है। इससे क्षेत्र में रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि मरामा बीन पर हो रहा अनुसंधान क्षेत्र के किसानों तथा उद्यमियों के लिए लाभकारी साबित होगा। उद्यमी दीपक अग्रवाल ने कहा कि दाल आधारित प्रसंस्करण उद्योग बेहतर पोषण सुरक्षा देने में प्रभावी है। स्थानीय पलायन रोकने तथा रोजगार देने में बीकानेर में यह क्षेत्र प्रभावी सिद्ध हुआ है। किर्कहाउस ट्रस्ट की सीईओ डॉ. क्लोडिया कैनल होलजैइस ने इस भ्रमण के लिए विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त किया। डॉ. भूपेंद्र सिंह शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान बलजीत सिंह बिश्नोई सहित विश्वविद्यालय प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, डीन पीजी डॉ राजेश वर्मा व अन्य के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

दो दिवसीय दौरे पर हैं डेलिगेशन

प्रतिनिधिमंडल में यूनाइटेड किंगडम, साउथ अफ्रीका, यूनाइटेड नेशंस ऑफ़ अमेरिका, नामीबिया, स्विटजरलैंड, मेडागास्कर सहित अन्य देशों से कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिक तथा विद्यार्थी शामिल हैं। यह प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को विश्वविद्यालय के रोजड़ी स्थित फार्म पर मारामा बीन के परीक्षणों तथा बीज उत्पादन के साथ-साथ मोठ और मूंग बीन बीज उत्पादन कार्यक्रम की जानकारी लेगा, साथ ही स्थानीय किसानों व वैज्ञानिकों के साथ संवाद भी आयोजित किया जाएगा।

मारामा बीन अनुसंधान का लिया जायजा

अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल को कृषि अनुसंधान केंद्र बीकानेर में संचालित किए जा रहे मरामा बीन अनुसंधान की प्रगति से भी अवगत करवाया गया।इस दौरान अफ्रीका से प्राप्त किए गए जर्मप्लाज्म तथा बीज उत्पादन कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में एसटीओएल प्रोग्राम के तहत दलहनी फसलों के अनुसंधान, जर्मप्लाज्म आदान-प्रदान और किसानों के लिए संभावित लाभों पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है की किर्क हाउस ट्रस्ट द्वारा विश्वविद्यालय को मारामा बीन पर अनुसंधान के लिए 3 साल का प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है।

मोठ, मूंग दालों के अफ्रीकी देशों में उत्पादन की संभावनाएं

तलाशने एसकेआरएयू पहुंचा अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल

बीकानेर, (निसं)। बदलती जलवायुवीय दशाओं के बीच अफ्रीकी देशों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से थार रेगिस्तान जैसे शुष्क क्षेत्रों में होने वाली मूंग, मोठ व अन्य दलहनी फसलों की जानकारी लेने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय पहुंचा। यूनाइटेड किंगडम के किर्क ह्यउस ट्रस्ट तथा एसकेआरएयू के बीच हुए एमओयू के तहत यह प्रतिनिधिमंडल दो दिवसीय दौरे पर राजस्थान आया है। अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने बताया कि प्रतिनिधि मंडल को विश्वविद्यालय द्वारा मोठ, मूंग सहित अन्य दलहनी फसलों तथा अन्य कृषि अनुसंधान की जानकारी दी गई। दलहनी फसलों के जर्मप्लाज्म से अफ्रीका में खाद्य सुरक्षा की नई संभावनाएं तलाशने की दिशा में किए गए कार्यों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर किर्क ह्यउस ट्रस्ट के एसटीओएल

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पीएन माथुर ने कहा कि अफ्रीका के शुष्क क्षेत्रों में सीमित दलहनी फसलों की खेती होती है, जिनमें चवला प्रमुख है। जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में मोठ मूंग बीन जर्मप्लाज्म को साझा करने से खाद्य सुरक्षा तथा अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल को विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र और विभिन्न शोध गतिविधियों की जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात करते हुए व्यवसायी आशीष अग्रवाल ने कहा कि बीकानेरी भुजिया ने बीकानेर को वैश्विक पहचान दिलाई है। इससे क्षेत्र में रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि मरामा बीन पर हो रहा अनुसंधान क्षेत्र के किसानों तथा उद्यमियों के लिए लाभकारी साबित होगा। उद्यमी दीपक अग्रवाल ने कहा कि दाल आधारित प्रसंस्करण उद्योग बेहतर पोषण सुरक्षा देने में प्रभावी है। स्थानीय पलायन रोकने तथा रोजगार देने में बीकानेर में यह क्षेत्र प्रभावी सिद्ध हुआ है। किर्कहाउस ट्रस्ट की सीईओ डॉ. क्लोडिया कैनल होलजैइस ने इस भ्रमण के लिए विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त किया। डॉ. भूपेंद्र सिंह शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान बलजीत सिंह बिश्नोई सहित विश्वविद्यालय प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, डीन पीजी डॉ राजेश वर्मा व अन्य के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

दो दिवसीय दौरे पर हैं डेलिगेशन

प्रतिनिधिमंडल में यूनाइटेड किंगडम, साउथ अफ्रीका, यूनाइटेड नेशंस ऑफ़ अमेरिका, नामीबिया, स्विटजरलैंड, मेडागास्कर सहित अन्य देशों से कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिक तथा विद्यार्थी शामिल हैं। यह प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को विश्वविद्यालय के रोजड़ी स्थित फार्म पर मारामा बीन के परीक्षणों तथा बीज उत्पादन के साथ-साथ मोठ और मूंग बीन बीज उत्पादन कार्यक्रम की जानकारी लेगा, साथ ही स्थानीय किसानों व वैज्ञानिकों के साथ संवाद भी आयोजित किया जाएगा।

मारामा बीन अनुसंधान का लिया जायजा

अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल को कृषि अनुसंधान केंद्र बीकानेर में संचालित किए जा रहे मरामा बीन अनुसंधान की प्रगति से भी अवगत करवाया गया इस दौरान अफ्रीका से प्राप्त किए गए जर्मप्लाज्म तथा बीज उत्पादन कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में एसटीओएल प्रोग्राम के तहत दलहनी फसलों के अनुसंधान, जर्मप्लाज्म आदान-प्रदान और किसानों के लिए संभावित लाभों पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है की किर्क ह्यउस ट्रस्ट द्वारा विश्वविद्यालय को मारामा बीन पर अनुसंधान के लिए 3 साल का प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है।